

MSW • प्रस्तुतीकरण

पर्यावरण संरक्षण, वन संरक्षण एवं जल प्रदूषण

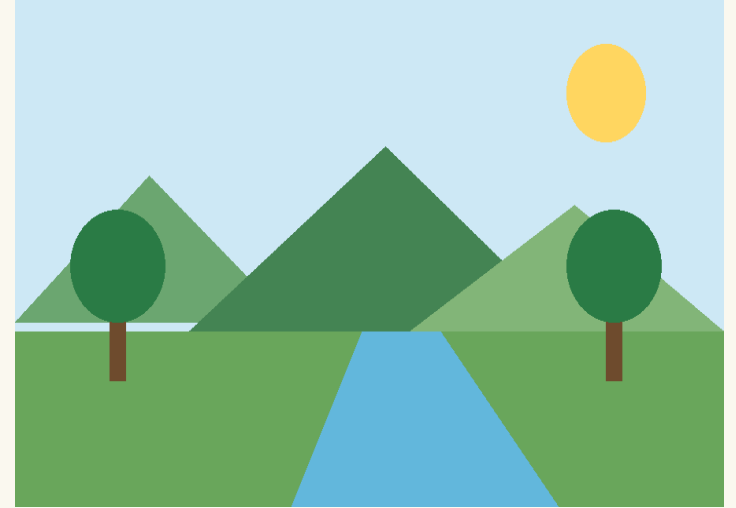
प्रकृति की रक्षा • जीवन की सुरक्षा • स्वच्छ भविष्य



Edit with WPS Office

1. प्रस्तावना

- पर्यावरण में वायु, जल, भूमि, पेड़-पौधे, जीव-जंतु और मानव शामिल हैं।
- स्वस्थ पर्यावरण जीवन, स्वास्थ्य और आजीविका के लिए आवश्यक है।
- प्रदूषण, वनों की कटाई और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक उपयोग पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं।
- पर्यावरण संरक्षण, वन संरक्षण और स्वच्छ जल एक-दूसरे से जुड़े हुए विषय हैं।



पर्यावरण

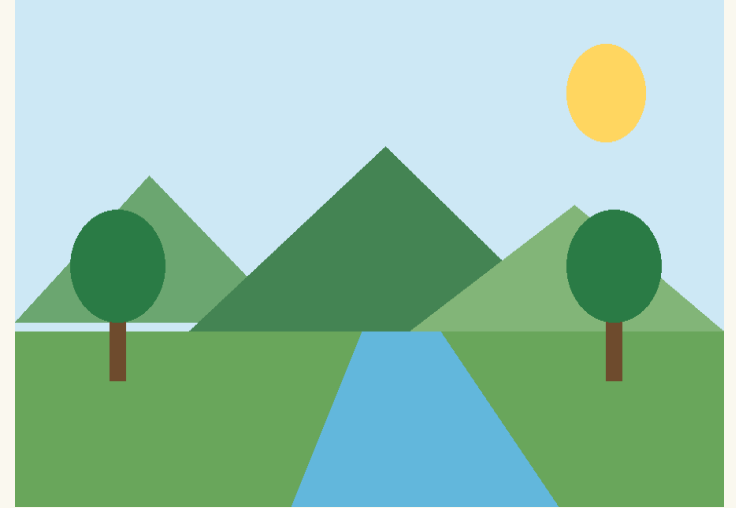
मुख्य उद्देश्य: प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना।



Edit with WPS Office

2. पर्यावरण संरक्षण का अर्थ

- प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना और उनका समझदारी से उपयोग करना पर्यावरण संरक्षण कहलाता है।
- प्रदूषण कम करना तथा पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखना इसका प्रमुख उद्देश्य है।
- वर्तमान जरूरतें पूरी करते समय भविष्य की पीढ़ियों के हितों का ध्यान रखना चाहिए।



प्राकृतिक संतुलन

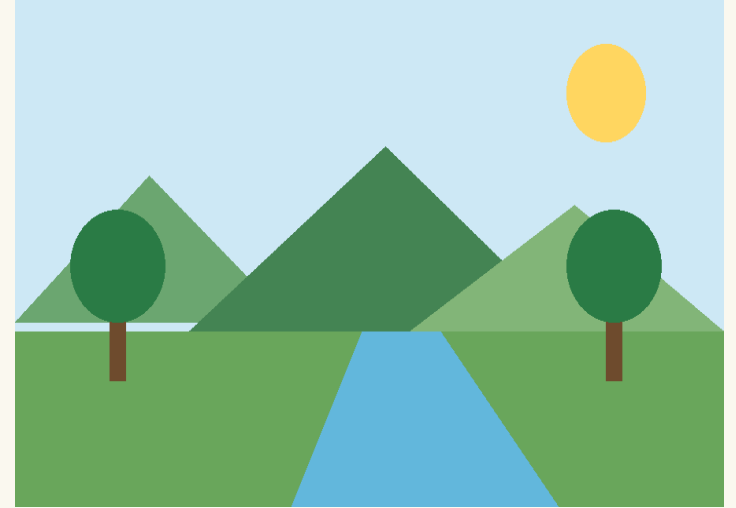
पर्यावरण संरक्षण में सरकार, समुदाय और प्रत्येक नागरिक की भूमिका है।



Edit with WPS Office

3. पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व

- स्वच्छ वायु और सुरक्षित जल उपलब्ध कराने में सहायता करता है।
- मानव स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाता है।
- जैव विविधता तथा प्राकृतिक आवासों की रक्षा करता है।
- जलवायु और प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग में मदद करता है।
- आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वस्थ वातावरण सुरक्षित रखता है।

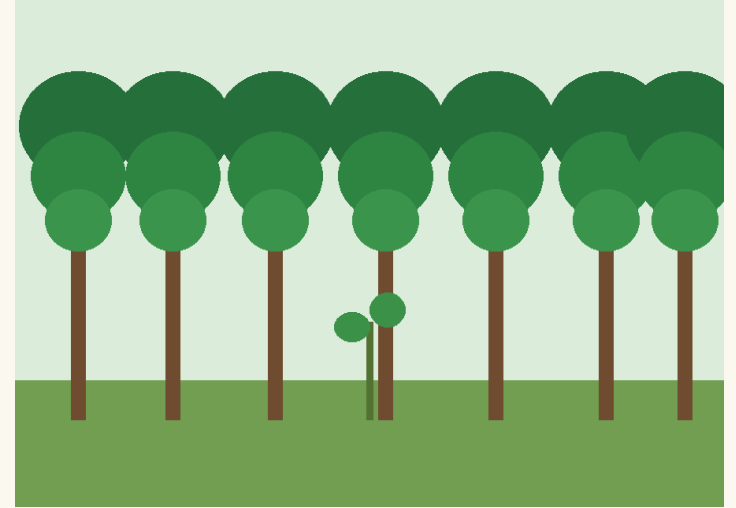


स्वस्थ पर्यावरण



4. वन संरक्षण का अर्थ और महत्त्व

- वन संरक्षण का अर्थ वनों, पेड़-पौधों, वन्यजीवों और उनके प्राकृतिक आवासों की रक्षा करना है।
- वन मिट्टी के कटाव को कम करने और जल चक्र को सहारा देने में मदद करते हैं।
- वन अनेक जीव-जंतुओं और पौधों को आश्रय प्रदान करते हैं।
- ग्रामीण और आदिवासी समुदायों की आजीविका में वनों का महत्त्वपूर्ण योगदान है।



वन संरक्षण

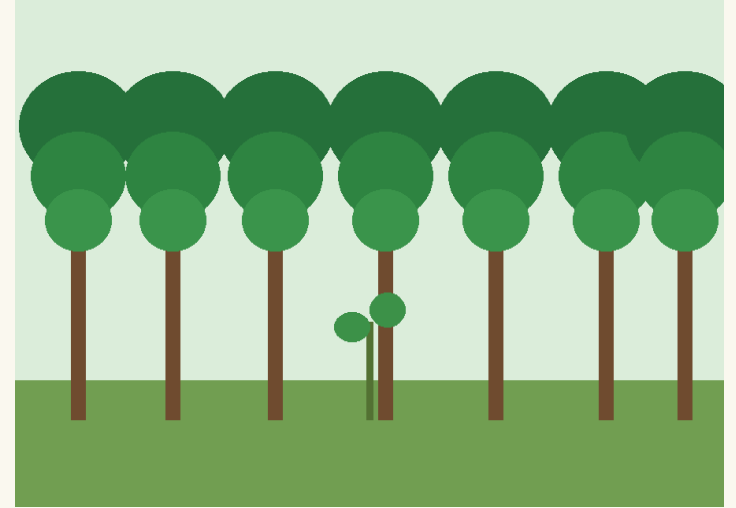
वन केवल लकड़ी का स्रोत नहीं, बल्कि जीवन और जैव विविधता का आधार हैं।



Edit with WPS Office

5. वन विनाश के प्रमुख कारण

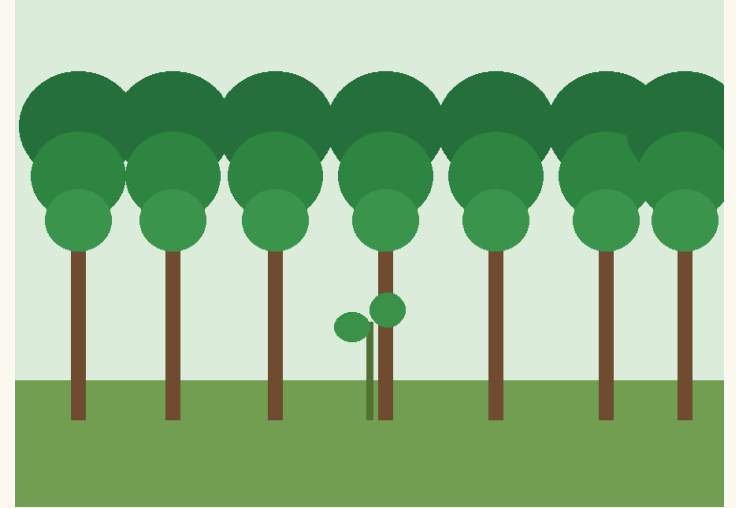
- आवश्यकता से अधिक पेड़ों की कटाई।
- खनन, सड़क निर्माण और अनियोजित शहरीकरण।
- कृषि तथा बस्तियों के विस्तार के लिए वन भूमि का उपयोग।
- जंगलों में आग और वन संसाधनों का अस्थिर उपयोग।



वन विनाश

6. वन संरक्षण के उपाय

- स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार वृक्षारोपण और पौधों की देखभाल करना।
- अवैध कटाई पर रोक लगाना और वन कानूनों का पालन करना।
- जंगलों में आग से बचाव और समय पर सूचना की व्यवस्था करना।
- स्थानीय एवं आदिवासी समुदायों को वन प्रबंधन में भागीदार बनाना।
- वन्यजीवों और उनके प्राकृतिक आवासों की रक्षा करना।



वृक्षारोपण

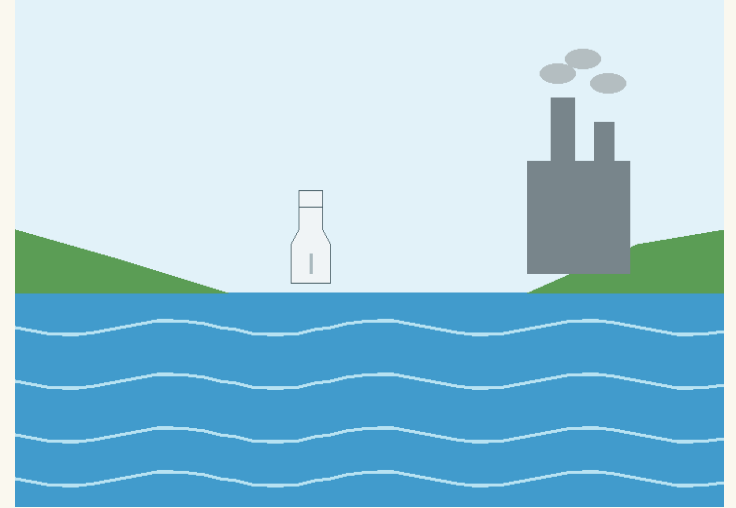
सिर्फ पौधे लगाना नहीं, उनका जीवित रहना भी आवश्यक है।



Edit with WPS Office

7. जल प्रदूषण का अर्थ

- जब हानिकारक पदार्थों के मिलने से जल की गुणवत्ता खराब हो जाती है, तो इसे जल प्रदूषण कहते हैं।
- प्रदूषित जल मनुष्य, पशु-पक्षियों और जलीय जीवों के लिए हानिकारक हो सकता है।
- नदी, तालाब, झील और भूजल—सभी जल स्रोत प्रदूषण से प्रभावित हो सकते हैं।



जल प्रदूषण

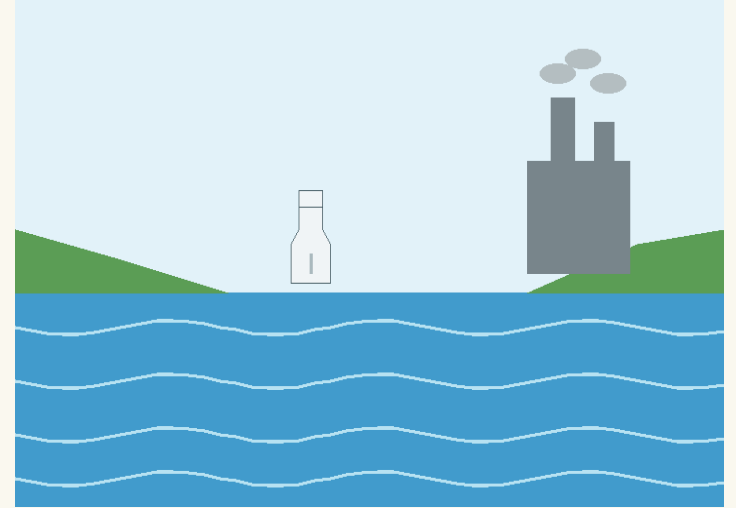
सुच्छ जल स्वास्थ्य और जीवन के लिए अनिवार्य है।



Edit with WPS Office

8. जल प्रदूषण के प्रमुख कारण

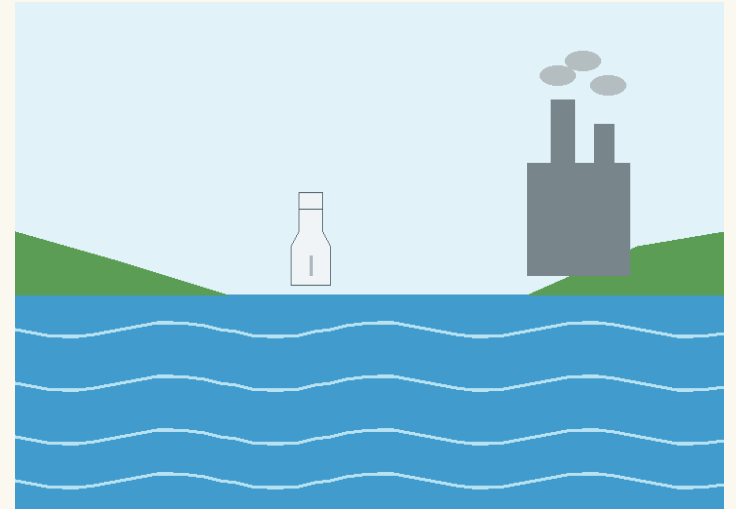
- घरेलू सीवेज और कचरे का जल स्रोतों में मिलना।
- उद्योगों से निकलने वाले अनुपचारित अपशिष्ट का पानी में जाना।
- कृषि में उपयोग होने वाले उर्वरकों और कीटनाशकों का बहकर जल में पहुँचना।
- प्लास्टिक, पूजा सामग्री और अन्य कचरे को नदियों-तालाबों में डालना।



जल प्रदूषण के कारण

9. जल प्रदूषण के प्रभाव

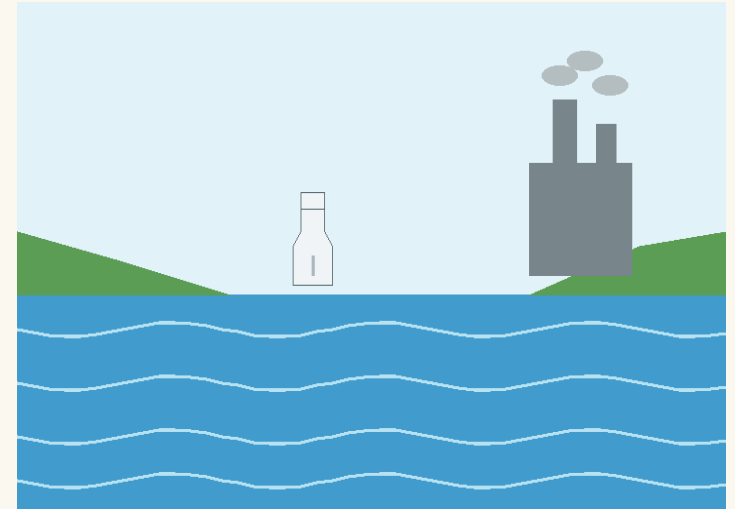
- दूषित पानी से जलजनित बीमारियों का जोखिम बढ़ सकता है।
- मछलियों और अन्य जलीय जीवों को नुकसान पहुँच सकता है।
- पीने योग्य स्वच्छ जल की उपलब्धता कम हो सकती है।
- प्रदूषित जल कृषि, आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकता है।



प्रभाव

10. जल प्रदूषण रोकने के उपाय

- घरेलू और औद्योगिक अपशिष्ट जल को उपचार के बाद ही छोड़ना।
- नदियों, तालाबों और कुओं में कचरा न डालना।
- प्लास्टिक का उपयोग घटाना और कचरे का सही निपटान करना।
- कृषि रसायनों का जिम्मेदारी से उपयोग करना।
- जल स्रोतों की सफाई और जन-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करना।

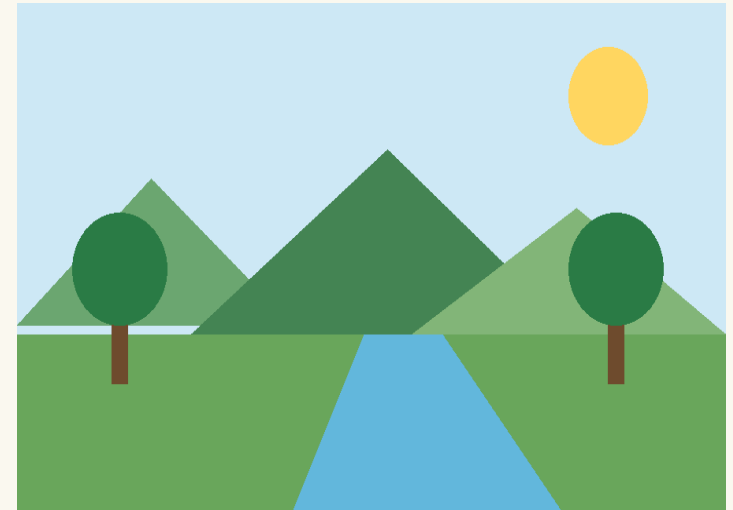


सूक्ष्म जल

जल संरक्षण के साथ-साथ जल की गुणवत्ता की रक्षा भी जरूरी है।

11. सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका

- समुदाय में पर्यावरण, वन और स्वच्छ जल के प्रति जागरूकता फैलाना।
- विद्यालयों, महाविद्यालयों और ग्राम पंचायतों के साथ अभियान चलाना।
- वृक्षारोपण, स्वच्छता रैली और जल स्रोतों की सफाई में लोगों को जोड़ना।
- स्थानीय समस्याओं की पहचान करके समुदाय और संबंधित विभागों के बीच समन्वय करना।
- महिलाओं, युवाओं और वंचित समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित करना।



जन-जागरूकता

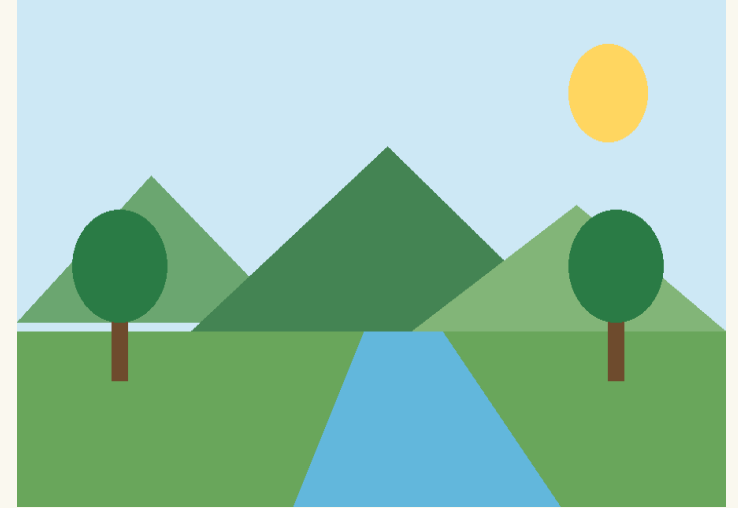
सामाजिक कार्य का आधार: जनभागीदारी, जागरूकता और सामूहिक कार्रवाई।



Edit with WPS Office

12. निष्कर्ष एवं संदर्भ

- पर्यावरण संरक्षण, वन संरक्षण और जल प्रदूषण की रोकथाम एक-दूसरे से जुड़ी जिम्मेदारियाँ हैं।
- व्यक्तिगत व्यवहार में बदलाव और सामुदायिक प्रयास मिलकर सकारात्मक परिणाम ला सकते हैं।
- संदर्भ: पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तकें; पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC); केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB); जल शक्ति मंत्रालय के जन-जागरूकता संसाधन।



सुरक्षित भविष्य

संदेश: प्रकृति की रक्षा करें—स्वच्छ और सुरक्षित भविष्य बनाएँ।



Edit with WPS Office